

पाँज स्त्री. (देश.) 1. बाहू पाश 2. छिछली नदी पुं.

1. सेतु, पुल 2. पाँजने की क्रिया या भाव, मजदूरी वि. वह जलाशय या नदी जिसमें इतना कम पानी हो कि उसे पैदल पार किया जा सके।

पाँजना स.क्रि. (देश.) धातुओं के टुकड़ों को जोड़ने के लिए उनमें टाँका लगाना, झालना।

पाँजरा क्रि.वि. (देश.) पास, समीप, निकट पुं. (देश.) सामीप्य, निकटता।

पाँजी स्त्री. (देश.) छिछली नदी अथवा झील जिसे पैदल चलकर पार किया जा सके।

पाँत स्त्री. (तद्.) 1. पंक्ति, रेखा, कतार उदा. ताराओं की पाँत घनी रे-प्रसाद 2. (प्रीति-भोज की) पंगत 3. समूह 4. परंपरा।

पाँतरना अ.क्रि. (देश.) 1. गलती या भूल करना 2. मूर्खता करना।

पाँतरिया वि. (देश.) 1. पंक्ति, रेखा, कतार 2. परंपरा उदा. सगुन सुमंगल पाँति-तुलसी।

पाँपण/पाँपणि स्त्री. (देश.) (नेत्रों के) पलक।

पाँय/पाँय पुं. (फा.) पैर, चरण, पाँव।

पाँयचा पुं. (फा.) पाजामे की मोहरी का वह अंश जो घुटनों के नीचे तक रहता है।

पाँव पुं. (तद्.) (मनुष्यों, पशुओं तथा जीव जंतुओं) का वह अंग जिसके बल पर वह चलता है, पैर मुहा. पाँव अड़ाना- बाधा डालना, अनावश्यक हस्तक्षेप करना; पाँव उखड़ जाना- ठहर न पाना; पाँव कब्र में लटकना- मृत्यु के निकट होना; पाँव की जूती- अत्यंत तुच्छ व्यक्ति; पाँव की धूल- तुलना में बहुत छोटा व्यक्ति या तुच्छ वस्तु; पाँव की बेड़ी- स्वच्छंद रहन-सहन में होने वाली बाधा, झंझट; पाँव घिसना- थक जाना, निरर्थक आना-जाना; पाँव जमना- दृढ़तापूर्वक खड़े होना, स्थिति दृढ़ होना; पाँव जमाना- अपनी स्थिति दृढ़ करना; पाँव टूटना- बहुत थक जाना; पाँव डगमगाना- आधार हिल जाना, साहस न होना; पाँव तले की धरती सरकना- स्तब्ध रह जाना; पाँव धरती पर न पड़ना, पाँव धरती पर न

रखना- बहुत गर्व करना; पाँव धोकर पीना- बहुत श्रद्धा रखना; पाँव निकालना- सीमा का उल्लंघन करना, मनमानी करना, दुष्कर्म करना; पाँव पकड़ना- चरणों पर गिरना, अत्यंत विनय करना; पाँव पड़ना- पैर छूना, अत्यंत दीनता तथा विनय प्रदर्शित करना; पाँव पसारना, पाँव फैलाना- अधिकार करना, स्थान घेरना, अधिक पाने के लिए प्रयत्न करना, अधिक पाने का लोभ करना; पाँव फिसलना- गलती होना; पाँव फूँक-फूँक कर रखना- बहुत सोच-समझकर काम करना; पाँव बढ़ाना- उन्नति करना, अधिकार करना; पाँव भारी होना- गर्भवती होना; पाँव में बेड़ी पड़ना- बंधन में पड़ना, विवाह होना, झंझट में फँसना; पाँव में मेहंदी लगाना- चलने में आलस्य करना, धीरे-धीरे चलना।

पाँव-चप्पी स्त्री. (देश.) पैर दबाने की क्रिया।

पाँवड़ा पुं. (देश.) 1. वह कपड़ा जो किसी आदरणीय व्यक्ति के मार्ग में इस उद्देश्य से बिछाया जाता है कि वह इस पर होकर चले, पादपट्ट 2. पाँव पोंछने के लिए दरवाजे पर रखा हुआ कपड़ा या ऐसी ही कोई अन्य वस्तु मुहा. पलक पाँवड़े बिछाना- बहुत प्रेम, उत्साह तथा श्रद्धा से स्वागत करना।

पाँवड़ी स्त्री. (देश.) 1. खड़ाऊँ 2. जूता 3. सोपान, सीढ़ी 4. ऐसी वस्तु या जगह जिस पर पैर पोंछे या रखे जाते हैं।

पाँवदान पुं. (देश.) पायंदाज, पाएदान।

पाँव-पाँव क्रि.वि. (देश.) पैदल जैसे- पाँव-पाँव चलो।

पाँव पूजी विवाह पुं. (देश.) विवाह की वह रीति जिसमें कन्या का पिता, वर की चरण-पूजा कर उसे कन्या सौंप देता है टि. इस विवाह में अन्य लेन-देन नहीं होता।

पाँवर वि. (तद्.) 1. नीच 2. तुच्छ 3. मूर्ख उदा. तुलसी परिहरि हरहि पाँवर पूजहिं भूत-तुलसी।

पाँवरी स्त्री. (देश.) 1. खड़ाऊँ, जूता 2. पौरी, ड्योढ़ी 3. ऊपर का कमरा या बैठक।